Saarth
E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

हिन्दी साहित्य में आधुनिक महिलाएँ

शीतल पटेल*

सार संक्षेप:

हिन्दी साहित्य में महिलाओं की जहाँ तक बात है तो बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से हमारे देश में जो नारीवादी आंदोलन हुए उन आंदोलन से भारतीय साहित्य काफी प्रभावित हुआ है। इसकी पृष्ठभूमि के रुप में यूरोप और अमेरिका की जिस नारीवादी विचारधारा के प्रभाव के कारण ऐसा हुआ है; वह स्वीकार करने के बावजूद कहा जा सकता है कि स्त्री विमर्श कभी तो संसार की समस्त नारियों द्वारा समस्त पुरुषों का विरोध करने वाली विचारधारा के रूप में उभरकर सामने आया तो कभी यह स्त्री की उन्मुक्त सेक्स की वकालत करने वाले साहित्य के रूप में सामने आया।

चाबीरूप शब्द: प्रस्तावना, साहित्य रचना, महिला साहित्यकारों, योगदान, आधुनिक साहित्य के प्रमुख स्तंभ

प्रस्तावना:

प्राचीन काल से ही भारतीय नारी ने पुरुष का कंधे से कंधा मिलाकर सदैव साथ दिया है बल्कि समाज के विभिन्न क्षेत्रों में भी बहुमूल्य योगदान दिया है। विदुषी महिला गार्गी, विद्योतमा, रानी लक्ष्मीबाई, सरोजिनी नायडू, श्रीमति विजय लक्ष्मी पंडित, श्रीमति इंदिरा गांधी, कल्पना चावला, साइना नहवाल, मेरिकोम इन सभी ने अपने-अपने क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा के बल पर नारी जाती को विशेष स्थान दिलाया है। साहित्य रचना भी इससे अछूती नहीं है। उपन्यासों या कहानियों अथवा महादेवी वर्मा, मन्नू भण्डारी, ममता कालिया, सुधा

Saarth E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

मूर्ति, महाश्वेता देवी, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग प्रभा खेतान, उषा प्रियंवदा आदि जाने पहचाने नाम आधुनिक साहित्य के प्रमुख स्तंभ है।

नारी पर लेखन :

जब नारिवाद नारे और आंदोलन के रूप में चर्चित नहीं था, तब भी नारिवाद लेखन किया गया है। रुकैया सखवत हसन की कहानी 'सुल्ताना का सपना' देखे। बंग महिला, सुमित्राकुमारी सिंहा, चंद्रकिरण सौनरेकसा की कहानियों के बाद महादेवी वर्मा की 'श्रृंखला की कड़िया' के आलेख अभूतपूर्व है। ऊन दिनों संस्मरण विधा का भी इतना चलन नहीं था पर महादेवी जी ने अपने आलेखो में कितनी सशक्त शैली में अपने समय की स्त्री की हर क्षेत्र में यातना का सटीक चित्रण किया। उसमे लछमा का चरित्र भूत कुछ कह जाता है।

महादेवी स्त्री को लेकर अपने समय की सोच पर या स्थितियों पर कोई बयान नहीं देती पर उस समय से उठाए गए एक स्त्री पात्र का जैसा रोंगटे खड़े कर देनेवाला चित्रण वह करती है, वह अपने अप में एक बयान है। कृष्णा सोबती की 'मित्रों मरजानी', उषा प्रियंवदा की 'पचपन खंभे लाल दिवारे',मन्नू भण्डारी की कहानिया-'बंध दराजों का साथ','तीन निगाहों की एक तस्वीर','अकेली','नई नौकरी','स्त्री सुबोधिनी परंपरा' और विद्रोह के संधिकाल में खड़ी स्त्री की कहानियाँ है।

इन कहानियों का विश्लेषण करे तो उस समय की स्त्री की सामाजिक स्थिति को बखूबी पहवहना जा सकता है। लेकीन महिला रचनाकारों की यह त्रयी जब तक रचनारत थी, उन्हे महिला लेखन के साँचे में नहीं डाला गया। उनकी कहानियों का जिक्र या समीक्षा मेनस्ट्रीम के रचनाकारों के साथ ही की गई।

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

इसके बाद जब ७५ के आसपास जब महिलाओं की एक बड़ी जमात ने अपनी धाक जमानी शुरू की तो समीक्षकों के लिए कोई विकल्प नहीं रह गया क्योंकि इसे अनदेखा करना संभव नहीं था। पिछले बीस सालों में अगर कुल कहानियों के विषय का विभाजन करे तो हम पाएंगे की सबसे ज्यादा कहानियाँ स्त्री के मुद्दों पर ही रची गई है। उपन्यास के क्षेत्र में स्त्री समस्याओं पर लिखे गए उपन्यासों की एक बेहद उर्वरा जमीन हिन्दी के रचनात्मक साहित्य में देखि गई है। कृष्णा सोबती की 'मित्रों मरजानी' एक अक्खड़ और दबंग औरत की एकांतिक तस्वीर प्रस्तुत करती है, उषा प्रियंवदा की 'रुकोगी नहीं, राधिका','पचपन खंभे','लाल दिवारे' और 'शेष यात्रा' में परंपरा और रूढ़ियों के द्वंद्व में फंसी एक आधुनिक स्त्री की अपनी अस्मिता को ढुंधने की तलाश है।

मन्नू भण्डारी का उपन्यास-'आपका बंटी' हिन्दी साहित्य में एक मिल का पत्थर है, जो अपने समय से आगे की कहानी कहता है और हर समय का सच होने के कारण कालातीत भी है। शकुन के जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी यही है कि व्यक्ति और माँ के इस द्वंद्व में वह न पूरी तरह व्यक्ति बनके जी सकी, न पूरी तरह माँ बनकर। .... और क्या यह केवल शकुन कि त्रासदी है? अपने व्यक्तित्व को पूरी तरह नकारती हुई अपने मातृत्व के लिए संबंधों के सारे नकारात्मक पक्षों को पीछे धकेलती हुई या उन्हें अनदेखा करती हुई हिंदुस्तान की हजारों औरतों की यही त्रासदी है।

अलग होने के बाद बच्चों की त्रासदी की कल्पना मात्र से हिंदुस्तान के ९०% विवाह टूटने से बचे रह जाते है। 'आपका बंटी' सिर्फ बच्चे की त्रासदी का उपन्यास नहीं है। इसमे शकुन की समस्या को भी बहुत गहराई के साथ उठाया गया है। अधिकांश भारतीय भाषाओं

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

में अनूदित इन तीन प्रमुख बहुचर्चित रचनाकारों के बाद सन१९८०-८५ के बाद हिन्दी में स्त्री विषयक उपन्यासों की जैसे बाढ़-सी आ गई।

ममता कालिया के उपन्यास 'बेघर' और 'एक पत्नी के नोट्स' में एक मध्यवर्गीय पढ़ी-लिखि महिला का भी अपने पति द्वारा एक सामान्य औरत की तरह ट्रीट किया जाना और गाहे बगाहे व्यंग्य का शिकार होना तथाकथित प्रगतिशील और पढे-लिखे वर्ग को बेंकब करता है। मृदुला गर्ग का 'अनित्य' जिसमे दो महत्वपूर्ण स्त्री पात्रों में से एक काजल एक फेमिनिस्ट प्राध्यापक की तरह उभरती है जो अनलिखे इतिहास को दुबारा लिखना चाहती है, भगत सिंह के सिद्धांतो पर विश्वास करती है और उसे पढाती है हालांकि वह उनके कोर्स में नहीं है, संगीता जो एक वेश्या की बेटी है पर अपने सिद्धांत खोती नहीं, अपनी अस्मिता के साथ खड़ी होती है।

प्रभा खेतान का 'पीली आंधी' तथा 'छिन्नमस्ता' जिसमे परंपरागत दक़ियानूसी मारवाड़ी परिवार की एक लड़की का बागी निकल आना कैसे पूरे समाज को उनके खिलाफ खड़ा कर देता है, का एक संपूर्ण दस्तावेज़ है। मैत्रेयी पुष्पा का बहुचर्चित उपन्यास'इदन्नमम' तथा 'चाक', मधु कांकरिया का 'सलाम आखिरी' और 'सेज पर संस्कृत'- जिसमे जैन साध्वियों का धर्म के नाम पर शोषण दबा-छिपाकर रखा जाता है पर युवा पीढ़ी की एक जैन लड़की शोषण के खिलाफ उठ खड़ी होती है। अल्का सरावगी का 'शेष कादम्बरी', अनामिका का 'दस द्वारे का पिंजरा' जिसमे पिछली शती की औरतों के क़दावर होने का आज के परिप्रेक्ष्य में समूचा बयान है।

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

कमल कुमार का प्रकाशित उपन्यास 'में घुम्मर नाचूँ' राजस्थान की एक बाल विधवा कृष्णा के चरित्र को फोकस करता हुआ स्त्री की आजादी को स्पष्टता से रेखांकित करता है और पुरुष प्रधान सत्ता को चुनौती देता है।

निष्कर्ष:

नारीवादी लेखन आज के समय की जरूरत है। आधुनिकता और उदार सोच के तमाम दावों के बावजूद स्त्री की सामाजिक स्थिति या उत्थान में कोई बड़ा क्रांतिकारी परिवर्तन नहीं आया है। आज भी वे समझोतों और दोहरे कार्यभार के बीच पीस रही है। पुरुष सता की निवें हमारे समाज में बहुत गहरे तक धँसी हुई है। इसे तोड़ना, बदलना या संवारना एक लंबी लड़ाई है। साहित्य और शिक्षा हो या सामाजिक संगठन, हर क्षेत्र में स्त्रियाँ अपनी-अपनी तरह से अपनी लड़ाई लड़ रही है और स्त्रियों की पारंपरिक दास्ता में बदलाव लाने की कोशिश में रत है।

संदर्भ सूची :

१. महाश्वेता- सुधा मूर्ति

२. मन्नू भण्डारी का रचना संसार- डॉ॰ षीना ईप्पन

३. आजकल : मार्च २०१३- पृष्ठ २०

४. पंचशील शोध- समीक्षा- पृष्ठ ८२

५. हिन्दी उपन्यासों में नारी- - डॉ॰ शैली रस्तोगी।

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

६. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार- डॉ॰ वैशाली देशपांडे

७. चित्रा मुद्दगल - आवा।